

पद १०४

(राग: यमन जिल्हा - ताल: धुमाळी)

अहा एकचि चेतन जगीं, पिंडीं व्यापक जीव म्हणती ब्रह्मांडीं
ईश शिव योगी ॥६७.॥ उठति स्फूर्ति वृत्ति ज्या मर्नीं (मी मी)।
चेतन तुम्हीं वृत्तीसी जाणतां। मग म्हणतां आम्ही तुम्ही। अघटित
सर्व शक्ति चेतनीं। चिदाकाशीं स्वस्वरूपें नटतां (माया रूपें
नटतां) भूत पंच बहुगुणी। भूत रसें देह पुरुष कामिनी। देहीं पूर्ण
कूटस्थ म्हणती चैतन्य ब्रह्म त्रिभुवनीं॥ (चाल) तेजी तेजाचे देह
निपजति। बुद्धि मन चित्त दंभ अहंकृती। वासना रज तम
सत्वाकृती। कल्पना रज तम सत्वाकृती। साक्षि तुम्हीं वृत्ति उदय
लय स्थितीं। मायाधीश तुम्हीं तुमच्या स्तवनीं, वेदही बसले
उगी ॥१॥ अहाहा किती जग नाटक भुली (पडली तुम्हां किती
जग नाटक भुली)। सिंह गर्जें आपुल्या भीतो, रवि बुडतो
मृगजलीं। स्वप्नीं मृतपतिका (सुवासिनी) विधवा झाली।
जाळील तेज काय आकाशा (अवकाशा)। तरंग सागर गिळी।
सुवर्णचि पूर्ण कटक कुंडली। सहज विनोदें चिदाकृति तुमची।
विश्वाकृति उसळली॥ (चाल) निद्रानंदी प्रपंच बुडाला। तो
चिद्रूपें जागृति नटला। पिंड ब्रह्मांड भेद हा गेला। ब्रह्म साम्राज्य
पदिं जीव आला। बोध मार्तांड तप यज्ञामृता सकलमती
फलभागी ॥२॥